शीर्षकः– समकालीन समाज में डंडा नाच पारम्परिक त्यौहारों का समाजशास्त्रीय अध्ययन

(ओड़िशा राज्य गंजम जिले के विशेष सन्दर्भ में)

1 AUTHOR

BIKKI RAM

GUEST LECTURER (SOCIOLOGY)

GOVT. NAVEEN GIRLS COLLEGE BAIKUNTHPUR KOREA (C.G)

सारांश–:

भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। विविधता देश की पहचान है। भारतीय नृत्य हमारी संस्कृति की सबसे प्रतिष्ठित पहचानों में से एक है। भारत में नृत्य रूपों को मोटे तौर पर 2 श्रेणियों शास्त्रीय और लोक नृत्य रूपों में वर्गीकृत किया जा सकता है। इन नृत्य रूपों की उत्पत्ति स्थानीय परंपरा के अनुसार भारत के विभिन्न हिस्सों से हुई है। प्राचीन राज्यों में से एक, ओडिशा एक विशाल इतिहास वाले मंदिरों की भूमि है। इसकी एक विविध संस्कृति है, और यह देश की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक है। डंडा नाच ओडिशा का एक पारम्परिक त्यौहार है, जो वर्तमान में आज भी प्रचलित है यह आमतौर पर फाल्गुन और चैत्र माह के मेरू संक्राति में किया जाता है। यह नृत्य पूरी तरह से भगवान शिव और देवी काली को समर्पित है। डंडा नाच परम्परा एक जटिल त्यौहार माना गया है, यह ऐतिहासि परम्परा आधुनिक समाज में भी अपनी अस्तित्व को बनाए रखा है, समकालिन समाज में भी डंडा नाच को एक विश्वसनिय त्यौहारों का दर्जा दिया गया है, लोग इसकी जटिल परम्परा को आज भी स्वीकार करते है, जब चैत्र माह की शुरूवात होती है तो स्थानिय लोग प्रफुल्लित हो जाते है। वर्तमान समाज में यह त्यौहार लोगों के लिए मनोरंजन और रोजगार को बढाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

प्रस्तावना–:

डंडा नाच या डंडा जात्रा का इतिहास – दक्षिण ओडिशा के विभिन्न हिस्सों और विशेष रूप से प्राचीन कलिंग साम्राज्य के गढ़ गंजम जिले में आयोजित सबसे महत्वपूर्ण पारंपरिक नृत्य उत्सवों में से एक है । डंडा नाता उत्सव हर साल फाल्गुन और चौत्र माह में आयोजित किया जाता है। राम प्रसाद त्रिपाठी के लेख के अनुसार, यह कलिंग साम्राज्य का एक प्राचीन त्योहार है और प्राचीन कलिंग राजधानी संपा या समापा यानी गंजम जिले के आधुनिक जौगड़ा में और उसके आसपास अभी भी जीवित है । दंड में भाग लेने वालों को दंडुआ (जिन्हें भोक्ता भी कहा जाता है) कहा जाता है और वे इस 13, 18 या 21–दिवसीय दंड अवधि के दौरान देवी काली और शिव की प्रार्थना करते हैं।

डंडा की शुरुआत चौत्र संक्रांति या मेरु पर्व से पहले एक शुभ दिन पर पारंपरिक पूजा और उपवास के साथ होती है। त्योहार के दिनों की कुल संख्या 13, 18 या 21 दिन है। इस उत्सव में केवल पुरुष ही भाग लेते हैं। प्रतिभागियों को 'भोक्ता' के नाम से जाना जाता है। सभी 'भोक्ता' या 'दंडुआ' त्योहार के दौरान इन सभी दिनों में बहुत पवित्र जीवन जीते हैं और वे इस अवधि के दौरान मांस, मछली खाने या सहवास करने से बचते हैं।

एक किंवदंती के अनुसार, कभी यहां के राजा लोगों से कर यान टैक्स वसूल कर मंदिरों का निर्माण किया करते थे. वहीं, जो लोग कर नहीं दे पाते थे, उन्हें गर्म रेत पर नंगे पांव चलने के लिए कहा जाता था और साथ ही पानी में डूबे रहने को भी कहा जाता था. निर्दोष नागरिक अपने बचाव के लिए देवी काली से प्रार्थना करते थे. तभी से डंडा जात्रा की परंपरा शुरू हुई और आज ये पूरी आयोजन के साथ एक उत्सव के रूप में मनाई जाती है. वहीं, इतिहासकारों का मानना है कि डांडा नृत्य की उत्पत्ति 400 साल पहले हुई थी.

ऐसा माना जाता है कि वर्तमान डंडा नाता तारा तारिणी शक्ति पीठ में हर साल मनाए जाने वाले प्राचीन चौत्र यात्रा त्योहारों का एक हिस्सा है । कलिंग सम्राटों ने अपनी इष्ट देवी तारा तारिणी के लिए इस चौत्र उत्सव का आयोजन किया था । लोक कथाओं के अनुसार, प्राचीन काल में 20 दिनों के डंडा अभ्यास के बाद डंडुओं को तारा तारिणी शक्ति/तंत्र पीठ (जो कि महान कलिंग शासकों की इस्ता देवी है) के पास इकट्ठा होना चाहिए और कुछ कठिन अनुष्ठानों के साथ अंतिम दिन अपने डंडा का समापन करना चाहिए।

<u>डंडा नाच जात्रा की विशेषताएँः–</u>

- डंडा नाच त्यौहार स्थानिय लोगों की धार्मिक परम्परा हैं।
- यह धार्मिक परम्परा चैत्र माह के मेरू संक्रान्ति में मनाया जाता हैं।
- इस जात्रा में पुरूष ही भाग लेते हैं, महिलाएं घर में ही रहकर पुरूषों के लिए मनोकामना करती हैं।
- डंडा जात्र एक जटिल त्यौहार है गलती करने पर भोक्ता द्वारा दण्डित किया जाता हैं।
- प्रत्येक जाति, समुदाय वर्ग के लोग मिलकर भाग ले सकते हैं।

<u>अध्ययन का उद्देश्यः–</u>

1. डंडा नाच धार्मिक उत्सव का एक रूप को ज्ञात करना।
2. आत्म अनुशासन के माध्यम से लोग श्रध्दा सुमन अर्पित करते हैं को ज्ञात करना।
3. एक डंडुआ को कई तरह की कठिन परीक्षाओं से गुजरना पड़ता है को ज्ञात करना।
4. डंडा नाच ऐतिहासिक परम्परा आज भी समाज में प्रचलित है को ज्ञात करना।

<u>परिकल्पनाः–</u>

सामाजिक शोध को वैज्ञानिक स्वरूप देने हेतु उपकल्पना का निर्माण अति आवश्यक हो जाता है, उपकल्पना सामाजिक शोध को एक आधार प्रस्तुत करता है, जिनके द्वारा सामाजिक शोध को एक दिशा तथा वैज्ञानिक स्वरूप मिल जाता है।

1. समकालिन समाज में डंडा जात्रा के प्रति लोगों में विश्वास जागृत होंगी।
2. ंडंडा नाच मन्नत (मानसिंख्य) त्यौहारो पर आधारित एक परम्परा होती होंगी ।
3. डंडा नाच ओडिशा राज्य की स्थानिय त्यौहारो में जटिल पर्व होती होंगी।
4. डंडा नाच की शुरुआत चौत्र संक्रांति या मेरु पर्व से पहले शुभ दिन पर प्रार्थना और उपवास से हो ती होंगी है।

<u>अध्ययन का क्षेत्रः–</u>

गंजम जिला (Ganjam District) भारत के उड़ीसा राज्य का एक जिला है (District of Odisha). जिला मुख्यालय छत्रपुर (Chhatrapur) है. गंजम को तीन उप–मंडलों छत्रपुर, बरहामपुर और भंजनगर में विभाजित किया गया है. यह ओडिशा का सबसे अधिक आबादी वाला जिला है. गंजम का कुल क्षेत्रफल 8,070 वर्ग किमी है (Ganjam Area). इस जिले में 13 विधानसभा क्षेत्र और 1 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र है (Ganjam Constituencies).

2011 की जनगणना के अनुसार गंजम जिले की जनसंख्या 3,529,031 है (Ganjam Population). जिले का जनसंख्या घनत्व 429 व्यक्ति है प्रति वर्ग किलोमीटर है (Ganjam Density). 2001–2011 के दशक में इसकी जनसंख्या वृद्धि दर 11.37% थी (Ganjam Population Growth). गंजम में प्रत्येक 1000 पुरुषों पर 983 महिलाओं का लिंगानुपात है (Ganjam Sex Ratio) और साक्षरता दर 71.88% है (Ganjam Literacy).

अध्ययन के स्त्रोंत :–

किसी भी शोध के लिए तत्थों का संकलन आवश्यक है, तत्थों के संकलन के साथ ही उनका विश्वसनीय एवं सार्थक होना भी आवश्यक है। तभी शोध की वास्तविकता उभरकर सामने आती है। प्रस्तुत शोध पत्र में मैने प्राथमिक और द्वितीयक प्रकार के स्त्रोतों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्त्रोत के अन्तगर्त साक्षात्कार, वार्तालाप, अवलोकन पध्दति का प्रयोग किया गया है। मेरे द्वारा द्वितीयक स्त्रोत के अंतगर्त इंटरनेट का उपयोग किया गया है।

समकालीन समाज में डंडा नाच पारम्परिक त्यौहार ओडिशा राज्य गंजाम जिले के विशेष सन्दर्भ में:–

हर साल हिन्दू कैलेंडर के चौत्र महीने में ओडिशा में डंडा जात्रा का त्योहारा मनाया जाता है. इसे 'डंडा नाचा' या 'डंडा नाटा' के नाम से भी जाना जाता है. इस जात्रा के दौरान लोग धार्मिक लोक नृत्य करते हैं, जो डंडा नृत्य के नाम से प्रसिद्ध है. डंडा जात्रा में भगवान शिव और देवी काली की पूजा की जाती है और डंडा नृत्य करते और ढ़ोल बजाते हुए लोग नंगे पांव एक स्थान से दूसरे स्थान तक यात्रा करते हैं।

डंडा नाच पारम्परिक त्यौहार गंजम जिले में आज भी प्रसिध्द है, डंडा नाच में कोई भी जाति, समुदाय के लोग भाग ले सकते है डंडा नाच में जो व्यक्ति डंडा नृत्य करते है उन्हें डंडुआ कहते है। डंडा नाच में लोगों की संख्या असीमित होती है डंडा नृत्य तीन चरणों में किया जाता है – पानी डंडा, धुली डंडा और अग्नि डंडा। डंडा उत्सव में वाद्ययंत्र का काफी महत्व है। डंडा जात्रा में शामिल लोग भूखे पेट रहते हैं और त्योहार के दौरान दिन में केवल एक बार भोजन करते हैं, इनमें दो मुख्य व्यक्ति होता है उन्हें ''पाटभुकता'' कहतें हैं जो अन्तिम दिन तक सिर्फ दिन में एक बार केला, सेव, अंगूर, दुध आदि का सेवन करता है यह परम्परा नृत्य एक जटिल नृत्य है जिसमें लोगों को बहुत सावधानी बरतनी पढ़ती है नृत्य त्यौहार के दिनो में डंडुआ किसी अन्य व्यक्ति से दूरी बनाते है पेशाब करने पर 'जनेउ' को कान पर लपेटना होता है जनेउ को उड़िया में ''पईता'' कहते है, सभी भोक्ता या डंडुआ के शरीर पर जनेउ होता है, मनुष्य और जानवर जैसे, कुत्ते के बातरूम में यदि गलती से पैर रख देते हैं तो उन्हें अपवित्र माना जाता है और उस डंडुआ को पाटभुक्ता द्वारा दण्ड दिया जाता है पाटभुक्ता के पास एक छड़ी होती है जो भी गलती करता है उसे उस

छड़ी से मारा जाता है, गाय के गोबर को पवित्र माना जाता है। डंडुआ और पाटभुक्ता दिन में एक बार नहाते है और नहाने के बाद सिर्फ डंडुआ ही सरबत बनाकर पिते है और अन्य लोगों को भी देते हैं पाटभुक्ता सिर्फ रात में ही केला, सेव, अंगूर, दुध आदि का सेवन करता है। डंडुआ लोग रात में अपने लिए भोजन बनाते है जिसको ''भोग'' कहते हैं, भोजन करने का भी एक परंम्परा है जिसमें लगातार एक पाटभुक्ता बेल बजाता है यह बेल एक मिनट का होता है इस एक मिनट में इनको अपना भोजन पुरा करना होता हैं पाटभुक्ता भोजन नहीं करते हैं। इस नृत्य में थर्ड जेण्डर भी आते है, और रात में फिल्म सुटिंग जिसे अपरा कहते है का कार्यक्रम होता है जिसमें कई गांव के लोग देखने के लिए आतें है और मनोरंजन भी करते है। डंडा जात्रा का पूरा खर्च लोगों से जमा किये गए चंदे के पैसों से होता है, और जिन परिवार की मान्सियक (मन्नत) होती है वे अपने स्वंय के पैसे से करते है वर्तमान में इसकी फिस 80000 रूपये तक है।

डंडा नाच नृत्य का अन्तिम दिन मेरू संक्रान्ति के दिन होता है जिस – जिस गांव में यह नाच होता है यंहा पर भारी संख्या में लोगों की भीड़ होती है जिस घर के लोग इस डंडा नाच में शामिल है उनके परिवार वाले मां काली की पुजा करने आते है, अन्तिम दिन में भी डंडुआ अपना प्रदर्शन दिखाते है और जो पाटभुक्ता होते है जो मां काली की सेवा करते है उन्हें जंहा पर यज्ञ हवन अग्नि होते हैं उनके ऊपर रस्सी से लटकाते है और उस पाटभुक्ता के नाक से तीन बूंद खून टपकते हैं जिसे मेरू दण्ड़ कहते है। इसी के साथ डंडा नाच का समापन होता है और अन्तिम दिन समस्त दण्डुआ और भोक्ता उपवास रहते है, और अगले दिन मां कालि पर बकरे की बलि दि जाति है इसी के साथ समस्त दण्डुआ और भोक्ता मिल कर भोजन करके अपने अपने घर लौट जाते हैं। डंडा नाच त्यौहार धार्मिक परम्परा के साथ–साथ विविधता में एकता का प्रतीक भी माना गया है।

निष्कर्ष–:

डंडा नाच त्यौहार ओडिशा राज्य गंजम का यह लोकप्रिय लोक नृत्य है, समकालिन समाज में यह परम्परा विश्वसनिय परम्परा है, जो मुख्यतः पौराणिक कथाओं पर आधारित है समाकालिन समाज में यह परम्परा स्थानिय निवासियों के लिए मनोरंजन और रोजगार के अवसर बने हुए है। यह समाज को काफी हद तक प्रभावित कर रहा है ओडिशा राज्य देवी देवताओं का राज्य माना गया है जिसमें देवी अराधना और उपासना को अधिक महत्व दिया गया है, यह परम्परा देवी काली और शिव पर समर्पित है। ओडिशा राज्य परम्पराओं का राज्य है देशभक्ति की भावना, प्रेम की भावना पैदा करके साहित्य, ईश्वर में विश्वास, संगीत के प्रति रुचि, रंगमंच सामाजिक साधन के रूप में कार्य करता है। समकालिन समाज में भी यह परम्परा बनी हुई है, डंडा नाच इसका एक महत्वपूर्ण उदाहरण है, जो चैत्र माह के मेरू संक्रान्ति के पर्व पर आयोजन होता है। ओडिशा राज्य में प्रत्येक माह में शिव की अराधना पर संक्रान्ति मनाया जाता है। डंडा नाच त्यौहार विविधता में एकता का एक प्रतीक है जिसमें विभिन्न समुदाय, जाति, वर्ग के लोग भाग लेते है जसमें छुआ छुत का कोई स्थान नहीं हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1 https://www.odishalifestyle.com/danda-nacha-an-instrument-of-social-unity/

2 https://jugaadinnews.com/culture-of-odisha-tradition-and-lifestyle/

3 https://durgadash.com/2020/04/04/danda-nacha-a-religiocultural-celebration-since-time-immemorial/

4 Rabindra Nath Dash (The Folk Dance of Ganjam : Danda Nacha)Patrika

5 Shiba sawin (Danda dance participant) mobile no. 7205343974 through interview schedule.

6 Danardan Sahu (Danda dance participant) mobile no. 9021564694 through interview schedule.